विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष 24 : अंक 41 : नई दिल्ली : 4-10 जनवरी 2019

अहिंसा यात्रा प्रणेता, शांतिदूत, महातपस्वी परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी अहिंसा यात्रा का कुशल नेतृत्व करते हुए तमिलनाडु के विभिन्न क्षेत्रों में विहरण कर रहे हैं। इन दिनों मौसम समशीतोष्ण-सा बना हुआ है। रात्रि में हल्की ठंड और दिन में हल्की गर्मी से युक्त यहां का मौसम कड़कड़ाती ठंड वाले क्षेत्र उत्तर भारत से समागत लोगों को मानों राहत प्रदान करता है। पूज्यप्रवर ने चेन्नई चतुर्मास के बाद अब तक कहीं भी निरंतर दो रात्रियों का प्रवास नहीं किया है, संभवतः अब यह अवसर तिरुपुर में ही आएगा। वहां पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में त्रिदिवसीय वर्धमान महोत्सव समायोज्य है। तदुपरान्त आचार्यप्रवर १५५वें मर्यादा महोत्सव हेतु कोयम्बत्तूर में मंगल प्रवेश करेंगे। १०-१२ फरवरी २०१९ को कोयम्बत्तूर में मर्यादा महोत्सव का त्रिदिवसीय कार्यक्रम भव्य रूप में समायोजित होगा।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण तमिलनाडु में

अपने आपसे युद्ध करो

२४ दिसम्बर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः उदियातुर से आसारंगकुप्पम की ओर प्रस्थान किया। मार्गस्थ केदार गांव के ग्रामीण आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। प्रायः पूरे विहार के दौरान सूर्य और बादलों द्वारा एक-दूसरे को पराजित करने का प्रयत्न चलता रहा। उनमें कौन विजयी हुआ, यह तो कहना कठिन है, किन्तु इतना अवश्य है कि इस कारण सूर्य प्रखर आतप बरसाने में असफल रहा। गत कल हुई वर्षा के कारण आज मार्ग में लटों आदि जीवों के साथ घोंघे भी दृष्टिगत हो रहे थे। वे जीव यत्र-तत्र आचार्यप्रवर के चरणों की गति मंदता के निमित्त बन रहे थे। मार्ग के दोनों ओर ईख और आलू की खेती प्रचुर मात्रा में दिखाई दे रही थी।

परम पूज्य आचार्यप्रवर करीब १२ कि.मी. का विहार कर आसारंगकुप्पम में पधारे। निर्मल विद्या मैट्रिकुलेशन स्कूल में आज सायं तक प्रवास रहा।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--'दुनिया में कभी-कभी युद्ध की बात भी होती है। युद्ध भी आदमी की एक वृत्ति है। शास्त्रकार ने कहा कि तुम स्वयं के साथ युद्ध करो। अपने द्वारा स्वयं को जीतकर आदमी सुख को प्राप्त कर सकता है। अपने साथ युद्ध का तात्पर्य है--अपनी वृत्तियों, कषायों और कर्मों के साथ युद्ध करना। कर्म और जीव में युद्ध चलता रहता है। इस युद्ध में कहीं औदयिक भाव तो कहीं क्षायोपशमिक भाव हावी बन जाता है। क्रोध और उपशम, अहंकार और विनय, माया और ऋजुता तथा लोभ और संतोष में परस्पर युद्ध चलता रहता है। यह भीतर का युद्ध है। भीतर के युद्ध में जो व्यक्ति जीत जाता है, वह बुद्ध बन जाता है।

भीतर का युद्ध करने के लिए शौर्य और साधन सामग्री भी चाहिए। युद्ध में साधन सामग्री का अपना महत्त्व है, किन्तु मनोबल और पराक्रम उससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण होता है। क्षयोपशम भाव इतना सुदृढ़ बना लिया जाए कि औदयिक भाव सामने आने की हिम्मत न करे। भीतर के युद्ध का अर्थ है मोहनीय कर्म को पछाड़ने का प्रयास। मोहनीय कर्म राजा के समान है। उसका अंत होने के बाद अन्य घातीकर्मरूपी शत्रु तो मानों कुछ ही समय में आत्मसमर्पण कर देते हैं। क्रोध, मान, माया और लोभ मोहनीय कर्म के परिवार के सदस्य हैं। उसे पछाड़ना मामूली

बात नहीं है। उसे एक साथ पछाड़ना कठिन भी हो सकता है। इसलिए उसके परिवार के एक-एक सदस्य को पराजित करने का प्रयास करना चाहिए।'

सायंकाल करीब सवा चार बजे आचार्यप्रवर आसारंगकुप्पम से पुत्तुमेडू की ओर प्रस्थित हुए। पीछे की ओर स्थित सूर्य की तेजस्विता नगण्य-सी थी, इस कारण मौसम सुहावना बना हुआ था। करीब ४.० कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर पुत्तुमेडू में स्थित गवर्नमेंट हायर सेकेण्ड्री स्कूल में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ।

आराध्य के आगमन से आह्लादित विल्लुपुरमवासी

२५ दिसम्बर। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर प्रातः पुत्तुमेडू से विल्लुपुरम की ओर प्रस्थित हुए। विल्लुपुरम के उत्साही श्रद्धालु सूर्योदय से पूर्व ही पूज्यसन्निधि में पहुंच गए। क्रिसमस की छुट्टी का सदुपयोग करने हेतु आसपास के अनेक क्षेत्रों के लोग भी आचार्यप्रवर के पावन सान्निध्य में उपस्थित हो रहे थे। पूज्यचरण ज्यों-ज्यों विल्लुपुरम की ओर बढ़ते जा रहे थे, जनप्रवाह बढ़ता जा रहा था और बढ़ता ही जा रहा था जनता का उल्लास, उत्साह और आह्लाद। करीब पांच दशक बाद अपने आराध्य का अपनी नगरी में आगमन स्थानीय तेरापंथ समाज के उल्लास को चरम तक पहुंचाने का निमित्त बना हुआ था तो अन्य जैन समाज में पूज्यप्रवर के पदार्पण से हर्षोल्लास छाया हुआ था। बुलन्द जयघोष लोगों के उत्साह की अभिव्यक्ति का साधन बने हुए थे। यत्र-तत्र प्रतीक्षा में खड़े लोग पूज्यप्रवर के निकट पधारते ही पूज्यचरणों में अपनी प्रणति अर्पित कर पावन आशीर्वाद प्राप्त कर रहे थे।

पूज्यप्रवर विल्लुपुरम के मूर्तिपूजक समाज की प्रार्थना पर स्थानीय उपाश्रय में पधारे और वहां कुछ क्षण अवस्थित होकर पावन संबोध प्रदान किया। आचार्यप्रवर का श्री महावीर जैन भवन में भी पदार्पण हुआ। संबंधित लोगों ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। आचार्यप्रवर ने उपस्थित लोगों को मंगल प्रेरणा प्रदान की। पूज्यप्रवर स्वागत जुलूस के मध्य एक अक्षम महिला को दर्शन देने उसके घर में भी पधारे। अनेक लोगों को अपने-अपने व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के आसपास आचार्यप्रवर के दर्शन करने और श्रीमुख से मंगलपाठ सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

करीब ७.५ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर आचार्यप्रवर विल्लुपुरम स्थित सरस्वती मैट्रिकुलेशन हायर सेकेण्ड्री स्कूल में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय के ऑनर श्री ए. राजशेखर ने पूज्यप्रवर का भावूपर्ण स्वागत किया।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'हमारी दुनिया में मित्र भी होते हैं तो शत्रु भी होते हैं। व्यावहारिक दुनिया में भी मित्रता और शत्रुता चलती है। मित्र सहयोगी बन सकता है और शत्रु विघ्न उत्पादक के रूप में सामने आ सकता है। बाहर की दुनिया के मित्रों और शत्रुओं से भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण है भीतर के मित्र और शत्रु। शास्त्रकार ने दस शत्रुओं की चर्चा की है। एक शत्रु को जीत लिया जाए तो पांच विजित हो जाते हैं। पांच शत्रुओं को जीत लिया जाता है तो दस शत्रु जीत लिए जाते हैं।

शत्रुओं को जीतना आसान कार्य नहीं है। जो व्यक्ति अपनी आत्मा को जीत लेता है, वह परम विजेता होता है। उस विजय के सामने दस लाख बाहरी शत्रुओं को जीतना भी छोटी बात होती है। भीतरी शत्रुओं से युद्ध करने के लिए भी पराक्रम की अपेक्षा होती है। समरांगण में युद्ध करते-करते शहीद हो जाना युद्ध की दृष्टि से गौरवपूर्ण बात होती है। लड़ते-लड़ते विजेता बन जाना तो और भी गौरवास्पद बात होती है। कोई समरांगण से डर कर भाग जाए, वह उसकी दुर्बलता होती है। आत्म विजय की दृष्टि से भी यही बात है कि साधना करते-करते जीवन समाप्त हो जाए तो भी कोई दुःख की बात नहीं होती। साधना करते-करते केवलज्ञान की प्राप्ति हो जाए तो वह परम विजय की स्थिति होती है, किन्तु घबराकर साधना पथ को छोड़ देना कायरता होती है।

आदमी को मानव जीवन में व्यर्थ लड़ाई-झगड़ों में न पड़कर आत्मयुद्ध करना चाहिए। एक आत्मा को जीत लिया जाए तो भीतर के सभी शत्रुओं पर विजय हो जाती है। आत्मा पर विजय पाने का अर्थ है कषायों पर विजय

प्राप्त कर लेना। इस प्रकार एक आत्मा पर विजय प्राप्त कर लेने पर चार कषायों सहित पांच पर विजय हो जाती है और एक आत्मा व चार कषायों पर विजय प्राप्त करने पर पांच इन्द्रियां भी विजित हो जाती हैं। इस प्रकार दस पर विजय हो जाती है। इसलिए आदमी अपनी आत्मा को जीतने का प्रयास करे, यह काम्य है।'

कार्यक्रम में उपस्थित विल्लुपुरमवासियों को आचार्यप्रवर ने अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार करवाए। पूज्यप्रवर ने कार्यक्रम में उपस्थित तमिलभाषी लोगों को जैन धर्म आदि के विषय में अवगति प्रदान करते हुए सप्ताह में एक दिन मांसाहार न करने की प्रेरणा प्रदान की तो उन्होंने यावज्जीवन शनिवार के दिन मांसाहार न करने का संकल्प स्वीकार किया।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्‌बोधन में कहा--'आज विल्लुपुरम में महासूर्य का आगमन हुआ है। लोग सूर्योदय से पूर्व ही आचार्यप्रवर की अगवानी में पहुंच गए। जहां-जहां परम पूज्य आचार्यप्रवर का पदार्पण होता है, वहां केवल तेरापंथ या जैन ही नहीं, सभी लोगों में अलौकिक उत्साह और उमंग की लहर देखने को मिलती है। आचार्यप्रवर के मुखारविंद पर हर समय मुस्कान खेलती रहती है। जो लोग आते हैं, आचार्यप्रवर उनका दुःख-दर्द सुनते हैं, उनकी समस्याओं को सुनते हैं और उन्हें समाधान प्रदान करते हैं। आचार्यप्रवर प्रतिदिन प्रवचन करते हैं, उसे सुनकर लोगों को लगता है कि सचमुच में अमृतपान कर रहे हैं। आचार्यप्रवर ने अपने जीवन का लक्ष्य ही परोपकार को बना रखा है, इसलिए लोग आपके पास खींचे चले आते हैं और प्रणत बन जाते हैं। आचार्यप्रवर लोगों को शांतिमय और आनंदमय जीवन के गुर भी बताते हैं। आचार्यप्रवर ने अहिंसा यात्रा के जो तीन सूत्र बताए हैं, अगर उन सूत्रों को जीवन में अपना लिया जाए तो जनता का जीवन संवर सकेगा।'

तेरापंथी सभा-विल्लुपुरम के अध्यक्ष श्री जंवरलाल सुराणा, मंत्री श्री राजेश सुराणा, श्री पंकज सुराणा, एस. एस. जैन संघ के अध्यक्ष श्री किशनलाल दुगड़, मूर्तिपूजक समाज के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र नाहर और घांची समाज की ओर से श्री भीखमचंद गहलोत ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी आस्थासिक्त भावाभिव्यक्ति दी। स्थानीय तेरापंथ महिला मण्डल ने गीत का संगान किया। तेरापंथ कन्या मंडल की कन्याओं ने गीत के द्वारा अपने आराध्य की अभ्यर्थना की। तेरापंथ युवक परिषद ने पूज्यप्रवर के स्वागत में गीत को प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी प्रस्तुति के द्वारा पूज्यचरणों में अपने भावसुमन अर्पित किए।

आज तिरुवन्नामलै व विल्लुपुरम परिक्षेत्र के डी.आई.जी. श्री संतोष कुमार ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल मार्गदर्शन प्राप्त किया।

सायंकाल करीब सवा चार बजे पूज्यप्रवर ने सरस्वती मैट्रिकुलेशन हायर सेकेण्ड्री स्कूल से सुराणा परिवार के निवास स्थान की ओर प्रस्थान किया। अनेक घरों और व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के आसपास उनसे संबद्ध लोगों ने आचार्यप्रवर के दर्शन कर मंगल आशीष प्राप्त की। करीब १.५ कि.मी. का विहार कर पूज्यप्रवर श्री गौतमचन्द महावीर सुराणा परिवार के निवास स्थान में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ। पूज्यप्रवर के इस अनुग्रह में अभिस्नात सुराणा परिवार धन्यता की अनुभूति कर रहा था।

वेलवनूर में पावन पदार्पण

२६ दिसम्बर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः विल्लुपुरम से वेलवनूर की ओर प्रस्थान किया। पूज्यप्रवर सुराणा परिवार की प्रार्थना पर विल्लुपुरम स्थित 'सुसवाणी माता' मंदिर परिसर में भी पधारे। पूज्यप्रवर ने मंदिर और मंदिर परिसर में निर्मीयमाण भवन का अवलोकन किया तथा वहां कुछ क्षण आसीन भी हुए। विहार मार्ग के समीप स्थित घरों के आसपास अथवा घरों में उनसे संबंधित श्रद्धालुओं को पूज्यप्रवर के दर्शन करने और मंगलपाठ सुनने का सुअवसर प्राप्त हुआ। इस प्रकार 'विल्लुपुरम' की सीमा से बाहर तक पहुंचते-पहुंचते विलम्ब हो गया। इस कारण आज के विहार के दौरान सम्मुखीन सूर्य कुछ प्रखरता धारण किए हुआ रहा, किन्तु आचार्यप्रवर उसकी परवाह किए बिना निरंतर गंतव्य की ओर गतिशील थे। मार्गवर्ती 'राघवन पेठ' गांव के ग्रामीणों ने आचार्यप्रवर

के दर्शन किए तो पूज्यप्रवर ने उन्हें पावन आशीर्वाद प्रदान किया।

आचार्यप्रवर के स्वागत हेतु वेलवनूरवासी आतुरता के साथ प्रतीक्षारत थे। पूज्यप्रवर के पदार्पण से उनकी आंतरिक प्रसन्नता और भी वर्धमान हो गई। जनता की उपस्थिति को देखकर यह अनुमानित होना कठिन था कि वेलवनूर में मात्र तीन तेरापंथी परिवार ही निवासित हैं। इसका कारण था स्थानीय अन्य जैन समाज का भी मुखर बना हुआ उत्साह। अनेक परिवारों ने अपने-अपने घरों व व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के निकट आचार्यप्रवर के दर्शन कर मंगलपाठ सुना। करीब १०.७ कि.मी. का विहार कर वलवनूर में स्थित गवर्नमेंट बॉयज् हायर सेकेण्ड्री स्कूल पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में पापाचरण से बचने की प्रेरणा प्रदान की।

उपस्थित वलवनूरवासियों ने पूज्यप्रवर की प्रेरणा से अहिंसा यात्रा के संकल्प ग्रहण किए। वलवनूर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री दिनेश आंचलिया व श्रीमती रेखा आंचलिया ने अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी। स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल की महिलाओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी प्रस्तुति दी।

पुदुचेरी सरकार द्वारा अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यप्रवर का राजकीय सम्मान

पुदुचेरी सरकार ने अपने प्रदेश की यात्रा के संदर्भ में अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यप्रवर को राजकीय अतिथि के तुल्य सम्मान अर्पित करते हुए २६ दिसम्बर को अपने संबंधित विभागों को आवश्यक निर्देश जारी किए।

अहिंसा यात्रा प्रणेता का भारत के पन्द्रहवें राज्य पुदुचेरी में पावन प्रवेश

२७ दिसम्बर। परमाराध्य आचार्यप्रवर प्रातः तमिलनाडु स्थित वलवनूर से पुदुचेरी स्थित तिरुवन्दर कोइल की ओर प्रस्थित हुए। मार्गवर्ती 'एकरायालिंगम' में स्थान-स्थान पर खड़े ग्रामीण समूह आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। कई लोग अपने बच्चों को भी पूज्यप्रवर के दर्शन करवा रहे थे। आचार्यप्रवर सब पर आशीषवृष्टि करते हुए गंतव्य की ओर गतिमान थे। विहार मार्ग पर आज लट आदि जीवों की मानों भरमार थी। इस कारण पूज्यप्रवर की गति काफी मंद बनी हुई थी। किसी जीव के दिखने पर आचार्यप्रवर और मुनिवृंद द्वारा उच्च स्वर में उच्चरित 'जीव है' आदि शब्द अन्य राहगीरों में भी हिंसा से बचने की प्रेरणा भर रहा था। चारित्रात्माओं को देखकर अनेक गृहस्थ भी उच्च स्वर में 'जीव है' आदि के उच्चारण के द्वारा अन्य लोगों को सजग करने में संलग्न हो गए। जीवों की अत्यधिकता के कारण लम्बी दूरी तक 'जीव है' आदि सजग करने वाले शब्द सुनाई दे रहे थे।

पुदुचेरी की सीमा से करीब सौ मीटर पूर्व परम पूज्य आचार्यप्रवर के कुशल नेतृत्व में चारित्रात्माओं ने पंक्तिबद्ध जुलूस का रूप धारण कर लिया। पुदुचेरी की सीमा में श्रावकजन मार्ग के दायीं ओर तथा श्राविकाएं बांयीं ओर कतारबद्ध और करबद्ध खड़े थे। आचार्यप्रवर ने करीब ८.२१ बजे पुदुचेरी की सीमा में पावन प्रवेश किया तो 'वन्दे गुरुवरम्' और 'जय-जय ज्योतिचरण जय-जय महाश्रमण' के नारों से वातावरण गुंजायमान हो उठा। पूज्यप्रवर ने अपनी अहिंसा यात्रा के दौरान भारत के पन्द्रहवें राज्य के रूप में इस केन्द्रशासित प्रदेश में प्रवेश किया। पुदुचेरी के श्रद्धालुओं ने अपनी धरती पर अपने आराध्य का आस्थासिक्त स्वागत किया। सिर पर लाल टोपी लगाए स्थानीय पुलिसकर्मी अहिंसा यात्रा की सुरक्षा व्यवस्था में तत्परता के साथ संलग्न हो गए।

पुदुचेरी भारत का एक केन्द्रशासित प्रदेश है। पहले यह फ्रांस के अधीन था। भारत की आजादी के बाद भी कुछ वर्षों तक यहां फ्रांस का शासन रहा। सन् १९५४ में अनौपचारिक रूप में तथा सन् १९६२ से औपचारिक रूप में इस पर भारत का अधिकार हो गया। तब से यह प्रदेश केन्द्रशासित प्रदेश के रूप में है। पुदुचेरी का नाम

पूर्व में इसमें समाविष्ट चार जिलों में से सबसे बड़े जिले 'पॉण्डिचेरी' के आधार पर 'पॉण्डिचेरी' रखा गया, जिसे सन् २००६ में बदलकर 'पुदुचेरी' कर दिया गया। स्थानीय भाषा में पुदुचेरी का अर्थ नया गांव होता है। करीब ३०० वर्षों तक फ्रांस के अधिकार में रहे इस प्रदेश में आज भी फ्रांसीसी वास्तुशिल्प और संस्कृति की झलक देखने को मिल जाती है। यहां के सुन्दर समुद्रतट पर्यटकों को आकृष्ट करते हैं। यही कारण है कि देश-विदेश से प्रतिवर्ष यहां लाखों पर्यटक पहुंचते हैं। क्रिसमस की छुट्टियों में तो यहां विदेशी पर्यटकों की भारी भीड़ रहती है। पुदुचेरी को अगस्त्य ऋषि की भूमि के रूप में भी माना जाता है।

पुदुचेरी महर्षि अरविन्द की भी तपःस्थली रही है। उन्होंने सन् १९२६ में यहां आश्रम की स्थापना की। उनकी साधना से आकृष्ट होकर मीरा अल्फासा नामक एक फ्रेंच महिला उस आश्रम में आई। कालान्तर में महर्षि अरविन्द ने उसे ही आश्रम का सारा दायित्व सौंप दिया। उस महिला को 'मदर'/मां नाम से जाना जाने लगा। करीब पचास वर्ष पूर्व परम पूज्य गुरुदेव तुलसी अरविन्द आश्रम में पधारे थे, उस समय वयोवृद्ध 'मदर' से भी उनकी भेंट हुई थी। अरविन्द आश्रम में महर्षि अरविन्द की समाधि भी है।

आश्रम की अधिकांश गतिविधियां 'मदर' की कल्पना के अनुरूप अब 'ऑरोविल' में समाहित हैं। 'ऑरोविल' की स्थापना सन् १९६८ में हुई। करीब तीन हजार एकड़ में विस्तीर्ण 'ऑरोविल' के द्वारा 'विश्व नगर' बसाने की कल्पना को साकार रूप दिया जा रहा है। विश्व मानव की एकता के उद्देश्य से स्थापित 'ऑरोविल' में वर्तमान में करीब ४९ देशों के लगभग २५०० लोग निवास कर रहे हैं, जिनकी पहचान 'ऑरोविलियन' के रूप में होती है। सन् १९८८ में भारतीय संसद ने ऑरोविल को विशेष कानूनी दर्जा दिया। मातृमंदिर ऑरोविल का केन्द्र है, जहां लोग आकर शांति की अनुभूति का प्रयत्न करते हैं। पर्यटकों को भी यह विशेष रूप से आकृष्ट करता है। ऑरोविल चार जोन में विभक्त है--सांस्कृतिक, अंतर्राष्ट्रीय, औद्योगिक और आवासीय। शिक्षा के क्षेत्र में ऑरोविल में विशेष प्रयोग चल रहा है। वहां सफलता का मापदण्ड परीक्षा नहीं है। बच्चों को उनकी रुचि के अनुसार अध्ययन करवाया जाता है। प्राप्त जानकारी के अनुसार ऑरोविल क्षेत्र में पर्यावरण शुद्धि की दृष्टि से करीब २० लाख वृक्ष लगाए गए हैं।

आचार्यप्रवर करीब १२.५ कि.मी. का विहार कर पुदुचेरी के तिरुवन्दर कोइल में पधारे। 'नेशनल पॉली प्लास्ट इंडिया लिमिटेड' परिसर में आज सायं तक का प्रवास हुआ। पूज्यप्रवर के इस अनुग्रह को प्राप्त कर श्री सुदर्शन पारख परिवार धन्यता की अनुभूति कर रहा था।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--'इन्द्रियों के माध्यम से आदमी ज्ञान प्राप्त करता है। ये इन्द्रियां ज्ञान की साधन बनने के साथ-साथ भोग की साधन भी बन सकती हैं। भोग से शरीर को पोषण मिल सकता है तो योग से आत्मा को। सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चारित्र योग है, मोक्ष का उपाय है। परम पूज्य आचार्य तुलसी गृहस्थावस्था में बालक के रूप में थे, तब उनके मन में वैराग्य भाव प्रकट हुआ। वह व्यक्ति बड़ा भाग्यशाली होता है, जिसके मन में संत बनने की भावना उत्पन्न हो जाती है। आचार्य तुलसी केवल संत ही नहीं बने, वे संतों के भी नेता बन गए थे। आज पौष कृष्णा पंचमी और षष्ठी है। पौष कृष्णा पंचमी का दिन आचार्य तुलसी का दीक्षा दिवस है। परम पूज्य कालूगणी के दर्शन का मौका बालक तुलसी को मिला। उनसे वह बालक आकृष्ट हो गया और कुछ ही समय में लाडनूं में उस बालक की दीक्षा हो गई। उस बालक की जन्मभूमि भी लाडनूं और दीक्षाभूमि भी लाडनूं हो गई।

संत बनने का अर्थ है त्याग के पथ को स्वीकार कर लेना। भोग से योग के मार्ग पर चल पड़ना। भोग से रोग बढ़ सकता है। जहां अतिभोग, असंयमपूर्ण भोग हैं, वहां कर्मरूपी रोग भी लगते हैं और शारीरिक व मानसिक रोग भी लग सकते हैं। इसलिए भोग पर योग का अंकुश रहना चाहिए। राग से त्याग की ओर, भोग से योग की ओर, प्रवृत्ति से निवृत्ति की ओर, मनोरंजन से आत्मरंजन की ओर आदमी की गति होनी चाहिए।

आचार्य तुलसी ने आज के दिन योग को प्रतिज्ञा के रूप में, संकल्प के रूप में स्वीकार किया था। वे जीवन के बारहवें वर्ष में साधु जीवन में प्रविष्ट हो गए। दीक्षा के बाद करीब ग्यारह वर्षों तक उन्हें अपने गुरु परम पूज्य कालूगणी के सान्निध्य में रहने और विकास करने का अवसर प्राप्त हुआ। गुरुदेव तुलसी ने संस्कृत का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया था। विभिन्न विषयों का ज्ञान भी उन्होंने अर्जित किया। एक ओर आगम का ज्ञान तो दूसरी ओर न्याय-दर्शन आदि का ज्ञान, कितनी-कितनी राग-रागिणियों के भी वे ज्ञाता थे। उन्होंने कालूगणी के साये में स्वयं का ही विकास नहीं किया, कई साधुओं ने भी उनके पास विद्या का अर्जन किया। बालमुनि नथमलजी 'टमकोर' (परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी) भी उनके उस समय विद्यार्थी थे।

बाद में जब कालूगणी का स्वास्थ्य चिन्तनीय बन गया, तब उन्होंने मुनि तुलसी को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। विक्रम संवत् १९९३ भाद्रव शुक्ला तृतीया को परम पूज्य कालूगणी ने मुनि तुलसी को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। करीब तीन दिन बाद भाद्रव शुक्ला षष्ठी को कालूगणी का महाप्रयाण हुआ तो युवाचार्य तुलसी तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य बने और भाद्रव शुक्ला नवमी को वे विधिवत आचार्य पद पर आरूढ़ हुए। उनका आचार्यकाल प्रलम्ब रहा। करीब साठ/इकसठ वर्षों तक उन्होंने आचार्य और गणाधिपति के रूप में जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ की सेवा की, जैन शासन की भी सेवा की और अणुव्रत आदि कार्यक्रमों के माध्यम से मानव जाति की भी सेवा की। एक समय आया, जब उन्होंने आचार्य पद को भी विसर्जित कर दिया। ऐसे महापुरुष गुरुदेव तुलसी का आज दीक्षा दिन है।

आचार्य तुलसी ने जन्म-मरण से मुक्ति का मार्ग आज के दिन स्वीकार किया था। उन्होंने अपने आचार्यकाल में कितने-कितने मुमुक्षुओं को साधु/साध्वी दीक्षा प्रदान कर मुक्ति के मार्ग पर अग्रसर कर दिया। वे स्वयं साधना मार्ग पर स्थित हुए और सैंकड़ों व्यक्तियों को साधना के मार्ग पर स्थित किया। उन्होंने कितनों को अणुव्रत के पथ पर स्थापित करने का प्रयास किया।

आखिर जीवन के नवें दशक में अर्थात् जीवन के तैंयासीवें वर्ष में उन्होंने अपनी इस यात्रा को सम्पन्न कर लिया। एक महापुरुष आज के दिन साधु के रूप में संघ में प्रविष्ट हुआ था। यह संघ का भी मानों सौभाग्य होता है, ऐसे बालक धर्मसंघ में दीक्षित, शिक्षित और विकसित होकर कभी धर्मसंघ को सर्वोच्च नेतृत्व देने वाले बन जाते हैं। आज मैं गुरुदेव तुलसी का अत्यंत श्रद्धा व सम्मान के साथ स्मरण करता हुआ वन्दन करता हूं। उनकी प्रेरणाओं को यदा-कदा स्मरण कर हम आगे बढ़ते रहें, यह काम्य है।'

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'श्री बच्छराजजी पारख ने भी अपने जीवन में योग-साधना की थी। उनके परिवार से संबंधित स्थान में आज आना हुआ है। उनके भाई सुमेरमलजी अभी वृद्धावस्था में हैं। वे भी खूब अच्छा धर्म-ध्यान करते रहें। स्व. बच्छराजजी के पुत्र सुदर्शनजी ने इस बार चेन्नई चतुर्मास में सेवा-उपासना का अच्छा लाभ लिया। आज हमने पुदुचेरी में प्रवेश किया और पहला पड़ाव पारख परिवार के यहां हो गया। पारख परिवार आध्यात्मिक विकास करता रहे।' पूज्यप्रवर ने संसारपक्ष में पारख परिवार से संबद्ध स्व. महासती झमकूजी का भी उल्लेख किया।

बालक आदीश पारख, बालिका आराध्या पारख, श्रीमती दीपा पारख, श्रीमती मंजू पारख व श्री आलोक पारख ने आचार्यश्री के समक्ष अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी।

आज के सायंकालीन विहार की कुछ अधिक दूरी को देखते हुए पूज्यप्रवर ने अपराह्न करीब पौने चार बजे तिरुवन्दर कोइल से वडामंगलम की ओर प्रस्थान किया। धूप कुछ कड़ी थी, किन्तु सूर्य पीठ की ओर था, इस कारण वातावरण में प्रायः अनुकूलता बनी रही। करीब ७.२ कि.मी. का विहार सम्पन्न कर आचार्यप्रवर वडामंगलम में पधारे। श्री रामकृष्ण हाइस्कूल में आज का रात्रिकालीन प्रवास हुआ।

दुःख का मुख्य कारण है कामना

२८ दिसम्बर। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः वडामंगलम से पुदुचेरी की ओर प्रस्थान किया। हल्के बादलों की उपस्थिति के कारण विहार के प्रारम्भ में मौसम कुछ सुहावना रूप धारण किए हुए था, किन्तु कुछ समय बाद सूर्य बादलों को चीरकर आतप बरसाने लग गया। पूज्यप्रवर मार्ग में अपने संसारपक्षीय ज्ञाति श्री बीरेन्द्रकुमार गांधी परिवार के निवास स्थान वाले अपार्टमेंट के भूतल में पधारे और वहां कुछ क्षण आसीन होकर गांधी परिवार व उससे संबंधित लोगों को उपासना का अवसर प्रदान किया।

आचार्यप्रवर के स्वागत में पुदुचेरीवासी तेरापंथी श्रद्धालु पलक-पांवड़े बिछाए खड़े थे तो अन्य जैन समाज के लोग भी सोत्साह उपस्थित थे। देश के विभिन्न प्रान्तों से भी अनेकानेक लोग पूज्यप्रवर के पुदुचेरी प्रवास के संदर्भ में पुदुचेरी पहुंच गए। इस प्रकार स्वागत जुलूस ने विशाल रूप धारण कर लिया। पुदुचेरीवासियों के खिलते चेहरों पर उनकी आंतरिक प्रसन्नता मुखर बनी हुई थी। पूज्यप्रवर करीब १२.५ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर पुदुचेरी में स्थित विवेकानंद हायर सेकेण्ड्री स्कूल में पधारे। पूज्यप्रवर का दो दिन और एक रात्रि का प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय की ऑनर श्रीमती के. पद्मा के साथ शिक्षकों और विद्यार्थियों ने भी पूज्यप्रवर का सश्रद्धा स्वागत किया।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के मुख्य प्रवचन से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्बोधन में कहा--'परम पूज्य आचार्यप्रवर का पदार्पण पांडिचेरी राज्य अथवा पांडिचेरी राज्य की राजधानी में हुआ है। गुरुदेव का आगमन एक इतिहास का सृजन है। परम पूज्य आचार्यप्रवर यहां पधारे हैं--

पांडिचेरी राज्य में मंगल मुनिय प्रवेश,
शांतिदूत देते रहें अमन-चैन संदेश।
पग-पग पर जय-विजय हो, रहे निरामय गात,
जन-जन में खिलते रहें, संयम के जलजात।।

यहां के लोग आचार्यप्रवर के संदेशों को सुनकर अपनी जीवनशैली को बदलें, अपने जीवन में कोई लक्ष्य बनाएं और उसे प्राप्त करने के लिए सतत प्रयास करते रहें तो उनके जीवन में सुख और चैन का अवतरण हो सकता है।' साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्बोधन में गुरुदेव तुलसी के पॉण्डिचेरी (पुदुचेरी) पदार्पण से संबंधित प्रसंगों को भी सुनाया।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'साधना करने वाले व्यक्ति के मन में निष्कामता का विकास होना चाहिए। गृहस्थ में भी भोगों की अतिआकांक्षा, अति इच्छा नहीं होनी चाहिए। काम को शल्य कहा गया। कामना जब तक पूरी नहीं होती, वह कांटे की तरह चुभ सकती है। वह कांटा चित्त को व्यथित कर सकता है। दुःख का एक मुख्य कारण है कामना। जहां पदार्थों के प्रति आसक्ति, कामना होती है, वहां दुःख होता है अर्थात् कामना दुःख का उत्पत्ति स्थान है। वीतराग व्यक्ति दुःख का पार पा जाता है।

कामना एक प्रकार का विष भी है, जो आदमी की साधना को खत्म कर देता है। जिसमें कामना नहीं होती, वह सुखी होता है। गृहस्थ इच्छा परिमाण और भोगोपभोग परिमाण व्रत स्वीकार कर ले तो उनका जीवन भी अच्छा बन सकता है और समाज भी अच्छा बन सकता है।

जहां परिग्रह होता है, वहां भय हो सकता है। भय के कारण अशांति हो सकती है। कामना, भय, चिन्ता, गुस्सा अशांति के कारण बनते हैं। इसलिए सुखी और शांतिमय जीवन के लिए आवश्यक है इन सब तत्त्वों से मुक्ति। सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति--अहिंसा यात्रा के ये तीन सूत्र कामना, भय, चिंता और गुस्से को कम करने वाले हैं। ये जैन-अजैन सबके लिए हितकारी हैं, कल्याणकारी हैं। अहिंसा यात्रा के तीनों सूत्र मानों अणुव्रत का निचोड़ है।' पूज्यप्रवर ने पुदुचेरीवासियों को संकल्पत्रयी ग्रहण करवाई।

आपके पदार्पण से पुदुचेरी बना और अधिक ऊर्जावान : विधानसभाध्यक्ष, पुदुचेरी

कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित पुदुचेरी के विधानसभाध्यक्ष तथा पूर्व मुख्यमंत्री श्री वी. वैथिलिंगम ने कहा--'आध्यात्मिक जगत् के महागुरु, लोगों की मन की भावनाओं को बदलने वाले आचार्यश्री महाश्रमणजी का मैं पुदुचेरी की धरती पर हार्दिक अभिनन्दन करता हुआ उनके चरणों में वंदन करता हूं। आज पुदुचेरी के लिए बहुत ही अच्छा दिन है। पुदुचेरी को हम आध्यात्मिक नगरी कहते हैं। यहां पर बहुत सारे सिद्ध और आचार्य हुए हैं। यह भारतियार (चिन्नास्वामी सुब्रमन्या भारती) और महर्षि अरविन्दो की भूमि है। आज आपने इस नगरी में पधारकर इस धरती को और अधिक ऊर्जावान बना दिया है। आपका पदार्पण पुदुचेरी के लिए ऐतिहासिक अवसर है। आपश्री के बारे में मैंने पढ़ा तो मुझे पता चला कि आप अपनी अहिंसा यात्रा के दौरान तीन देश और भारत के उन्नीस राज्यों में जनता को शांति के मार्ग पर चलने की प्रेरणा प्रदान करने के लक्ष्य से आगे बढ़ रहे हैं। आपके इस लक्ष्य में हमारा राज्य भी सम्मिलित है, यह हम सभी का परम सौभाग्य है। आज देश को आपके मंगल संदेशों की आवश्यकता है। भौतिकता की ओर भाग रही जनता में अच्छी भावनाओं के जागरण के लिए आपश्री द्वारा किया जा रहा कठोर परिश्रम जन-जन को अवश्य जागृत करेगा, ऐसा मेरा विश्वास है। आपके तीनों उद्देश्यों को जो भी अपने जीवन में उतार लेगा, उसका कल्याण तो होगा ही, उसके साथ उसका परिवार भी उन्नत बनेगा, ऐसा मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं। मैं अपने आपको परम सौभाग्यशाली मानता हूं कि आज मुझे आपके दर्शन करने और प्रवचन सुनने का सुअवसर प्राप्त हुआ।'

पुदुचेरी की डीजीपी श्रीमती सुन्दरी नन्दा ने कहा--'पूज्य स्वामीजी! आज मैं बहुत प्रसन्न हूं कि मुझे आपके दर्शन करने और आपका आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यहां की जनता और पुदुचेरी पुलिस पर आप अपना आशीर्वाद हमेशा बनाए रखें, ताकि यहां के नागरिक सुख-चैन से रह सकें।'

पुदुचेरी तेरापंथी उपसभा के संयोजक श्री हेमराज कुंडलिया व रोटरी क्लब की ओर से श्री पांडिराजन ने अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी। बालिका मुस्कान जैन ने गीत का संगान किया। बेंगलुरु से सामगत ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने गीत के माध्यम से आचार्यप्रवर की अभ्यर्थना की।

स्कूल की ऑनर श्रीमती के. पद्मा ने अपनी भावाभिव्यक्ति में कहा--'आज हमारा परम सौभाग्य है कि अलौकिक तेज से चमकते मुखमंडल वाले, आध्यात्मिक जगत् के देवता आचार्यश्री महाश्रमणजी का हमारे इस विद्यालय परिसर में पदार्पण हुआ है। आपकी अहिंसा यात्रा के तीनों संकल्प सभी का कल्याण करने वाले हैं। सबका भला करने के लिए इतना पैदल चलने वाले महात्मा के दर्शन मुझे पहली बार प्राप्त हो रहे हैं। आज आपने हमारे इस विद्यालय को और हमारे विद्यार्थियों को जो मंगल आशीर्वाद प्रदान किया, वह हमारे जीवन के लिए अविस्मरणीय है। आपकी आगे की यात्रा मंगलमय हो, मैं यही कामना करती हूं।'

रात्रि में पुदुचेरी सरकार के सामाजिक अधिकारिता मंत्री श्री एम. कंदासामी पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ पहुंचे। उन्होंने आचार्यश्री के दर्शन कर पावन पथदर्शन प्राप्त करने के उपरान्त कहा--'आपके आने से पुदुचेरी की धरती पावन हो गई। मुझे विश्वास है कि आपके आशीर्वाद से सब अच्छा होगा, राज्य का विकास होगा।'

जो अकिंचन, वह तीन लोक का स्वामी

२६ दिसम्बर। आज के मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में भी पुदुचेरीवासियों द्वारा पूज्यप्रवर के स्वागत का उपक्रम रहा। श्री कनकमल सुरणा, सुश्री राजुल ढड्ढा, श्रीमती संजू बरड़िया, श्री धनसुख सेठिया, तेरापंथी उपसभा-पुदुचेरी के संयोजक श्री हेमराज कुंडलिया, बालिका नमिषा बोथरा ने अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति के द्वारा श्रीचरणों में अपनी भावांजलि अर्पित की। कार्यक्रम में महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का भी उद्बोधन हुआ।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'दो शब्द हैं मूढ़ और मूर्ख। दोनों को एकार्थक भी माना जा सकता है और दोनों में भिन्नता भी देखी जा सकती है। मूढ़ वह होता है, जो मोहग्रस्त होता है

और मूर्ख वह होता है, जो अज्ञानी होता है। विद्या संस्थानों में मूर्खता और धर्म स्थानों में मूढ़ता को मिटाने का प्रयास किया जाता है।

जो अकिंचन होता है, एक दृष्टि से वह तीन लोक का स्वामी बन जाता है। जिसके पास कुछ है, वह कुछ का स्वामी है। जो सब कुछ त्यागकर अपरिग्रही बन जाता है, वह एक दृष्टि से तीन लोक का नाथ बन जाता है। जैसे-जैसे लाभ होता है, वैसे-वैसे लोभ बढ़ता है। लोभ को पाप का बाप कहा गया है। लोभ के कारण आदमी कितने-कितने पाप कर लेता है। लोभ तो मानों सर्वविनाशक होता है। आदमी को लोभ का अल्पीकरण करने का प्रयत्न करना चाहिए। लोभ को संतोष से जीतने का प्रयास करना चाहिए। लोभ मोहनीय कर्म के परिवार का मुखिया होता है। तृष्णा की आग को बुझा दिया जाए अथवा वह अल्प हो जाए तो आत्मा कल्याण के पथ पर अग्रसर हो सकती है।'

पूर्व शिक्षामंत्री व डी.एम.के. पार्टी के श्री एस.पी. शिवकुमार ने अपने अभिभाषण में कहा--'दुनिया में प्रकाश के तुल्य, शुद्धता के तुल्य, गंभीरता के तुल्य, ऊर्जा के तुल्य और भगवान के तुल्य किसी एक व्यक्तित्व को देखना हो तो आचार्यश्री महाश्रमणजी को देखा जा सकता है। मैं ऐसी परम आत्मा के दर्शन कर धन्य हो गया। आचार्यश्री के दर्शन कर जब मैंने अपने पूरे परिवार के लिए आशीर्वाद मांगा तो आचार्यजी ने जो मुझ पर अपने आशीर्वाद की कृपा बरसाई, उससे मेरा और मेरे परिवार का अवश्य कल्याण होगा, ऐसा मेरा विश्वास है। इस कृपा के लिए मैं गुरुजी के चरणों में अपनी हार्दिक कृतज्ञता समर्पित करता हूं।'

छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री गौतम चोरड़िया ने अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी।

पुदुचेरी के मुख्यमंत्री पूज्यसन्निधि में

कार्यक्रम के दौरान पुदुचेरी के मुख्यमंत्री श्री वी. नारायणसामी व विधानसभा के डिप्टी स्पीकर डी.पी. शिवाकोलुन्दु पूज्य सन्निधि में उपस्थित हुए। उन्होंने आते ही पूज्यप्रवर को सविनय वंदन किया।

मुख्यमंत्रीजी की उपस्थिति में परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा--'हम जैन धर्म के संत हैं। भारत में विभिन्न धर्म हैं। उनमें एक जैन धर्म भी है। भारत के बाहर भी जैन धर्म का प्रसार है। भगवान महावीर इस अवसर्पिणी के चौबीसवें तीर्थंकर हुए। हम लोग साधु हैं। जीवन भर के लिए हमने घर-परिवार का त्याग कर दिया है। हमारे मुख्य पांच नियम हैं--सर्वप्रणातिपात विरमण, सर्वमृषावाद विरमण, सर्वअदत्तादान विरमण, सर्व मैथुन विरमण और सर्व परिग्रह विरमण। इन्हें संक्षेप में अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह कहा जा सकता है।

जैन धर्म में दो प्रकार के संत हैं--दिगम्बर और श्वेताम्बर। दिगम्बर कपड़े नहीं रखते और श्वेताम्बर सफेद वस्त्र धारण करते हैं। हम लोग श्वेताम्बर परंपरा में हैं। अभी हम लोग अहिंसा यात्रा के नाम से यात्रा कर रहे हैं। ९ नवम्बर २०१४ को दिल्ली से इस यात्रा का प्रारंभ किया था। अभी इस यात्रा का पांचवां वर्ष चल रहा है। इस यात्रा में हम नेपाल गए, भूटान भी गए, भारत के विभिन्न राज्यों में गए। अभी पुदुचेरी में आए हुए हैं। हम इस यात्रा में मुख्य रूप से तीन बातों का प्रचार कर रहे हैं--सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति। जाति, संप्रदाय आदि को लेकर आदमी हिंसा, हत्या में भागीदार न बने, सबके प्रति सद्भावना रखे। आदमी जिस किसी क्षेत्र में कार्य करे, उसमें बेईमानी से बचे, ईमानदारी रखे। आदमी शराब, सिगरेट, गुटखा, खैनी आदि नशीले पदार्थों का सेवन न करे। इन तीन बातों को जनता में फैलाने का हम यत्किंचित् प्रयास कर रहे हैं। मेरा मानना है कि सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति जिसके जीवन में होती हैं, उसका जीवन काफी अच्छा होता है।

किसी भी राष्ट्र/प्रान्त के लिए भौतिक विकास भी जरूरी होता है और आर्थिक विकास भी अपेक्षित होता है। इसके साथ शैक्षिक विकास भी आवश्यक होता है। यदि आध्यात्मिक विकास और नैतिक विकास भी हो जाता है तो परिपूर्ण अथवा अहुअंगीण विकास हो जाता है। हम लोग पुदुचेरी में आए हुए हैं। आज मुख्यमंत्रीजी का

आगमन हो गया। यहां की जनता में खूब शांति रहे, सद्भावना, ईमानदारी और नशामुक्ति का विकास हो।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का भी पुनः वक्तव्य हुआ।

मुख्यमंत्री श्री वी. नारायणसामी ने कहा--'मैं सर्वप्रथम महर्षि आचार्यश्री महाश्रमणजी के श्रीचरणों में वन्दन करता हूं तथा अपने राज्य में आपका और आपकी अहिंसा यात्रा का स्वागत करता हूं। भगवान महावीर द्वारा दिए गए शांति के संदेशों के साथ उत्तर भारत से यात्रा करते हुए आपका हमारे इस छोटे राज्य में पदार्पण हुआ है तो हम आपको भगवान महावीर के रूप में ही देखते हैं। महाराजजी! पुदुचेरी छोटा प्रदेश है। यहां सभी जातियां आपसी सौहार्द के साथ रहती हैं। हमारे राज्य के सभी लोगों में शांति रहे, सरकार उस दिशा में कार्य कर रही है, किन्तु इस कार्य की सफलता के लिए आप जैसे महर्षि के आशीर्वाद की भी अपेक्षा है और हम आपसे ऐसे आशीर्वाद की कामना करते हैं। मैं आपके आगमन से बहुत प्रसन्न हूं। मैं अपनी सरकार और पुदुचेरी की जनता की ओर से यह प्रार्थना करता हूं कि आपका आशीर्वाद हम सभी पर सदैव बना रहे।'

विधानसभा के उपाध्यक्ष श्री डी.पी. शिवाकोलुन्दु ने कहा--'आज मैं स्वयं को अत्यन्त सौभाग्यशाली मानता हूं कि मुझे आध्यात्मिक गुरु आचार्यश्री महाश्रमणजी की मंगल सन्निधि में पहुंचने और उनका पावन आशीर्वाद प्राप्त करने का अवसर मिला। वैसे हम नेता लोग तो रोज ही जनता के बीच अथवा किसी पार्टी आदि में जाते रहते हैं, किन्तु आज आध्यात्मिक वातावरण में आकर बहुत ही प्रसन्नता महसूस हो रही है। जिस प्रकार महात्मा गांधी ने अहिंसा के बल पर विदेशियों से इस देश को जीता, उसी प्रकार आचार्यश्री की अहिंसा यात्रा लोगों के दिलों को जीत रही है और लोगों में सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा भर रही है। आपकी मंगलवाणी से हमारे पुदुचेरी की जनता का भी कल्याण हो, आपश्री से ऐसे आशीर्वाद की याचना करता हूं।'

आज पुदुचेरी के भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री वी. स्वामीनाथन, पार्लियामेंट सेक्रेट्री व राजभवन विधानसभा क्षेत्र के विधायक श्री के. लक्ष्मीनारायण तथा पुदुचेरी हिन्दु मुन्नानी संगठन के अध्यक्ष श्री सनिलजी आदि ने भी पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन पथदर्शन प्राप्त किया।

पूज्यप्रवर की अनुज्ञा प्राप्त कर आज अनेक साधु-साध्वियां प्रवासस्थल से करीब आठ कि.मी. दूर स्थित ऑरोविल का अवलोकन कर आए।

सायंकाल करीब सवा चार बजे पूज्यप्रवर ने पुदुचेरी से वेलरमपेट की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में अनेकानेक जैनेतर व्यक्ति पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। पूज्यप्रवर लगभग ५.५ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर वेलरमपेट स्थित मदर टेरेसा मॉडल हायर सेकेण्ड्री स्कूल में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ।

प्रभु का घर बने मस्तिष्क

३० दिसम्बर। परमाराध्य आचार्यप्रवर प्रातः वेलरमपेट से किरुममपक्कम की ओर प्रस्थित हुए। मार्ग में अरविन्द आई हॉस्पिटल के समीप उससे संबद्ध डॉक्टर्स तथा अन्य स्टाफ ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। आचार्यप्रवर ने उन्हें पावन प्रेरणा प्रदान की। आज के विहार के दौरान सूर्यकिरणें अहिंसा यात्रा के संभागियों से काफी अछूती रहीं। इसका कारण बने मार्ग के परिपार्श्वस्थ हजारों वृक्ष। सघन वृक्षावली ने मानों आज बादलों के दायित्व का निर्वहन करते हुए विहार मार्ग की सुरम्यता को बरकरार रखा, लेकिन संभवतः यही शीतलता जीवोत्पत्ति का निमित्त बन गई। स्थान-स्थान पर दिखाई दे रहे लट आदि जीव पूज्यचरणों की गति को मंद बना रहे थे। लगभग १० कि. मी. का विहार कर आचार्यप्रवर किरुममपक्कम में स्थित राजीव गांधी कॉलेज ऑफ इंजिनियरिंग एण्ड टेक्नोलॉजी में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने पावन प्रवचन में कहा--'आदमी की यह कमजोरी होती है कि उसे गुस्सा आ जाता है। गुस्सा मनुष्यों का शत्रु होता है। उसे प्रयत्नपूर्वक शांत बनाना

चाहिए। आदमी को हर किसी बात को ग्रहण ही नहीं करना चाहिए। मस्तिष्क कूड़ाघर नहीं, प्रभु का घर बने, यह काम्य है। शांति से सहने से कर्म निर्जरा और गुस्सा करने से कर्मबंधन हो सकता है। किसी दृष्टि से गुस्सा करने वाला छोटा और शांत रहने वाला बड़ा होता है। आदमी गुस्से को कृश करने का प्रयास करे, यह वांछनीय है।'

वर्षान्त में आराध्य के आगमन व नववर्ष के मंगलपाठ का उपहार पाकर हर्षाए कडलूरवासी

३१ दिसम्बर। सन् २०१८ का अंतिम दिन। आज सूर्योदय से पूर्व तमिलनाडु के उद्योग मंत्री श्री एम.सी. संपत आचार्यप्रवर के दर्शनार्थ पहुंचे। प्राप्त जानकारी के अनुसार वे रात्रि करीब ३.३० बजे पूज्यप्रवर के दर्शन हेतु चेन्नई से प्रस्थित हुए। आचार्यप्रवर ने उन्हें पावन मार्गदर्शन प्रदान किया। परम पावन आचार्यप्रवर ने सूर्योदय के कुछ समय पश्चात् किरुममपक्कम से कडलूर की ओर प्रस्थान किया। उद्योग मंत्रीजी जैन ध्वज लेकर कुछ दूर तक पूज्यप्रवर के आगे-आगे चले। मार्ग में उन्होंने पुनः पूज्यप्रवर को वंदन कर चेन्नई की ओर प्रस्थान किया।

अपने आराध्य की आतुरता के साथ प्रतीक्षा कर रहे कडलूर के श्रद्धालु भी अलसुबह ही पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में पहुंच गए थे। आचार्यप्रवर की कडलूर से बढ़ती निकटता उनके उत्साह को भी वृद्धिंगत कर रही थी। पूज्यप्रवर ने विहार के दौरान पुदुचेरी से पुनः तमिलनाडु राज्य में प्रवेश किया। मार्ग में टेनपेन्नई नदी तथा गिडिलम नदी पर बने पुल पूज्यचरणों से पावनता को प्राप्त हुए।

आचार्यप्रवर के पदार्पण से कडलूरवासी हर्षविभोर बने हुए थे। न केवल तेरापंथ समाज, अपितु अन्य जैन समाज का उल्लास भी चरम को छूता हुआ-सा प्रतीत हो रहा था। जैनेतर समाज में पूज्यप्रवर के पदार्पण से उमंग छाई हुई थी। नववर्ष के मंगलपाठ का महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम अपनी धरती पर होना कडलूरवासियों के लिए 'सोने पे सुहागा' कहावत को चरितार्थ करने वाला था। भव्य स्वागत जुलूस कडलूरवासियों के उत्साह और उल्लास को अभिव्यक्त कर रहा था। करीब ११.५ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर आचार्यप्रवर कडलूर में स्थित सेंट जोसेफ स्कूल में पधारे। पूज्यप्रवर का दो दिनों व एक रात्रि का प्रवास यहीं हुआ। फादर श्री वी. एन्जेल ने विद्यालय परिसर की ओर से पूज्यप्रवर का 'वेलकम' किया।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में आचार्यप्रवर के प्रवचन से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का उद्बोधन हुआ।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'इस अवसर्पिणी के चौबीस तीर्थंकरों में तेईसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्व थे। पौष कृष्णा दसमी का दिन पार्श्व जयंती के रूप में मनाया जाता है। भगवान पार्श्व वीतराग बने थे। उन्होंने राग-द्वेष को समाप्त कर दिया था। राग और द्वेष दो ऐसे तत्त्व होते हैं, जो आत्मा को मुक्ति का वरण करने नहीं देते। ये कर्मों के बीज हैं। इन्हें जीत लेने वाले वीतराग बन जाते हैं और वे मुक्तिश्री का भी वरण कर लेते हैं।

भगवान पार्श्व जब राजकुमार रूप में थे, तब उन्होंने नाग-नागिन के जोड़े का मानों उद्धार करने का प्रयास किया था। जलते हुए नाग-नागिन को उन्होंने पाठ सुनाया, वे नाग-नागिन मरकर भवनपति जाति में धरणेन्द्र-पद्मावती के रूप में उत्पन्न हुए। भगवान पार्श्व का जप किया जाता है, हो सकता है कि उसके पीछे लोगों की भौतिक आकांक्षाएं भी हों। संसार में आदमी को भौतिकता भी चाहिए, विघ्न-बाधा निवारण भी चाहिए, किन्तु सबसे बड़ी बात होती है कि आदमी वीतराग बनने के लिए भगवान पार्श्व का स्मरण करे। भगवान पार्श्व को पुरुषादानीय कहा जाता है। वे काफी लोकप्रिय हैं।

आज भगवान पार्श्व का जन्मदिवस है। हमारी दुनिया में जन्मदिवस का भी स्मरण किया जाता है, उसे मनाया भी जाता है। जन्म है तो साथ में मृत्यु भी आगे होने वाली होती है। जन्म एक छोर है तो मृत्यु दूसरा छोर है, बीच में जीवन होता है। आदमी जीवन कैसे जीता है, यह महत्त्वपूर्ण बात होती है। भगवान पार्श्व का जीवन कितना साधनामय रहा। राग और द्वेष को जीतने की साधना बड़ी महत्त्वपूर्ण होती है। राग-द्वेष को जीत लिया जाए तो परम सुख प्राप्त हो सकता है। भगवान पार्श्व ने राग-द्वेष को जीतने की साधना की। वे केवलज्ञान को प्राप्त हुए,

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/2018-20 Wed.-Thu.
L.No.-U (C) 200/2018-2020
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

अर्हत बने। अर्हत अध्यात्म के अधिकृत प्रवक्ता होते हैं। हमारी दुनिया में धर्म और अध्यात्म के क्षेत्र में सर्वोत्कृष्ट व्यक्ति अर्हत होते हैं, ऐसा प्रतीत हो रहा है।

तेईसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्व थे और चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर हुए। तीर्थंकर जिस क्षेत्र में विद्यमान रहते हैं, मानों कि उस क्षेत्र और उस भूमि के लिए वह महत्त्वपूर्ण समय होता है। जैन शासन में 'णमो अरहंताणं' के माध्यम से अर्हतों, तीर्थंकरों को नमस्कार किया गया है।

भगवान पार्श्व ने मानों दुनिया को सन्मार्ग दिखाने का प्रयास किया। यह दुनिया का मानों सौभाग्य होता है कि यहां महापुरुष पैदा होते हैं। वे महापुरुष दुनिया को मानों सन्मार्ग दिखाते हैं। भगवान पार्श्व ने परम की साधना कर मानव जीवन की परम सार्थकता प्राप्त कर ली और ऐसे स्थान को प्राप्त हो गए, जहां से पुनः आना नहीं होता। वे देह को छोड़कर देहमुक्त हो गए। उनकी आत्मा मानों परम में स्थित हो गई। एक जन्म में साधना की पूर्णता का होना मुश्किल है। कितने जन्मों में साधना करते-करते उच्च भूमिका प्राप्त होती है। मैं आज परम प्रभु भगवान पार्श्व का श्रद्धा के साथ स्मरण करता हूं।'

पूज्यप्रवर ने सन् २०१८ की सम्पन्नता के संदर्भ में कहा--'सन् २०१८ अब विदाई लेने को तत्पर हो रहा है। एक वर्ष हमारे साथ रहा, अब यह हमें मानों अलविदा कहने को तत्पर हो रहा है। सन् २०१९ का मानों स्वागत होने वाला है। आदमी समय का सदुपयोग करे, यह काम्य है।'

कार्यक्रम में बड़ी संख्या में उपस्थित कडलूरवासियों ने पूज्यप्रवर की प्रेरणा से अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार किए।

तेरापंथी सभा-कडलूर के अध्यक्ष श्री सौभागमल सांड, श्री जैन संघ समाज-कडलूर की ओर से श्री कुशलराज धारीवाल और श्री त्यागराजन ने अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी। स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल ने गीत के द्वारा पूज्यप्रवर की अभ्यर्थना की। श्री जैन समाज की महिलाओं ने भी स्वागत गीत का संगान किया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी प्रस्तुति के माध्यम से पूज्यचरणों में अपनी विनयांजलि अर्पित की।

नववर्ष के संदर्भ में परम पूज्यप्रवर के दर्शन व आशीर्वाद प्राप्त करने तथा श्रीमुख से मंगलपाठ सुनने के लिए भारत के विभिन्न प्रान्तों से श्रद्धालु कडलूर पहुंच गए। लोगों के आने का सिलसिला देर रात तक जारी था।

मुनि दीक्षा की घोषणा

१ जनवरी २०१९। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने ईरोड में अक्षय तृतीया के दिन मुमुक्षु आकाश पारख (ईरोड) को मुनि दीक्षा प्रदान करने की घोषणा की।

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार के लिए पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, ३ पोर्चुगीज चर्च स्टीट, कोलकाता ७०० ००१
मो. नं. ७०४४७७८८८८ Email : vigyapti@terapanthinfo.com

आनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाइल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

●

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-६ नवीन शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, २१० दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- ११०००२ से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला